UMRAO HOSPITALS
MULTI-SPECIALTY, TERTIARY CARE
MIRA ROAD

विश्व स्ट्रोक दिवस के निमित्त से स्ट्रोक सप्ताह पर वृत्तपत्रीय लेख (प्रेसनोट)

आय्टी क्षेत्र में काम करनेवाली सुनिता (नाम बदला हुआ है) को अचानक 'असहनीय' सिरदर्द और उलटियों की वजह से मीरा रोड के उमराव रूग्णालय में लाया गया| ५० वर्षीय व्यावसायिक, सूर्यकांत (नाम बदला हुआ है) को उनकी पत्नी अस्पताल ले आई क्योंकि उनकी बातों में सुसंगती नहीं थी और शब्दोच्चार स्पष्ट नहीं थे| ४५ वर्ष की गृहिणी, नेत्रा (नाम बदला हुआ है) के बाए हाथ की शक्ती यकायक चली गई| मधुमेह तथा उच्च रक्तदाब के मरीज, ६५ साल के नीरज के शरीर के बाए हिस्से को लकवा मार गया ओर उनके घरवालों को उन्हें तुरंत अस्पताल में भरती करना पडा|

"इन सारे लोगों की पार्श्वभूमी अलग थी, व्यवसाय अलग और आयु भी अलग थी| लेकिन हर एक का दर्द एक ही था - ब्रेन स्ट्रोक| जीवित हानि तथा अपंगता का यह विश्व में देखा गया प्रायः सब से बडा कारण है| जो इससे बचते हैं वे विकलांग हो जाते हैं या बोलने या देखने की क्षमता खो बैठते हैं| उमराव रूग्णालय के

न्युरोसर्जन डॉ. हर्लीन ल्युथर के अनुसार 'स्ट्रोक या ब्रेन अटॅक' की घटनाएँ बहुत ही बढ गई हैं| ६० साल से कम उम्र के लोग भी इस की झपट में अब आ गए है| दरसल कुछ साल पहले ऐसी स्थिती नहीं थी| २९ अक्तूबर के स्ट्रोक दिवस के अवसर पर वे उमराव रूग्णालय द्वारा आयोजित 'स्ट्रोक सप्ताह' के विषय में संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे|

स्ट्रोक के दो कारण हो सकते हैं- रक्तवाहिका में गुंथी या दिमाग की किसी रक्तवाहिका में स्राव! उमराव रूग्णालय जैसे भिन्न प्रकार के अस्पतालों में स्ट्रोक के रूग्णों पर उपचार करने की विशिष्ट प्रणाली होती है| तुरंत किए गए सीटी स्कॅन से कारण का पता चलता है कि गुंथी है या स्राव! इस के तुरंत बाद या तो गुंथी पिघलाने की प्रि□या की जाती है या फटी रक्तवाहिका को सिलने की बेहद ही नाजुक शस्त्रि□या की जाती है| यह बेहद जरूरी है कि रूग्ण के घरवाले और रिश्तेदार स्ट्रोक को जल्द से पहचाने और साडे चार घंटे के अंदर ऐसे अस्पताल में रूग्ण को ले जाएँ जहॉ सीटी स्कॅन या डिफ्युजन एम्आरआय् और स्ट्रोक युनिट हो| अगर यह हो जाए तो टीपीए याने 'टिश्यू प्लास्मिनोजेन ॲक्टिव्हेटर' दवाई देकर गुंथी से संबंधित याने इस्केमिक स्ट्रोक की अवस्था में गुंथी को सुलझाया जा सकता है| डॉ. हर्लीन ने यह भी कहा कि जितने जल्द उपाय शुरू हो उतनी बचने की शक्यताएँ अधिक हैं |

समय का यहॉ बेहद महत्त्व है| स्ट्रोक के लक्षण जल्द से जल्द पहचानकर योग्य अस्पताल में तुरंत भरती करवाके स्कॅन के बाद तुरंत उपचार होना- ये सारी बातें प्रथम लक्षण दिखने के साडे चार घंटों में होनी चाहिए| उचित समय याने दिमाग का बचना!

रेडिऑलॉजी विभाग की प्रमुख डॉ. रूचिरा मारवाह ने कहा, "उमराव में हमारे पास सीटी तथा एम्आर् पर्फ्युजन इमेजिंग की सुविधाएँ हैं जिससे कुछ ही क्षणों में दिमाग के रक्त की अवस्था का पता लगता है| इससे समय बरबाद किए बिना हम रूग्ण को उपचार दे सकते हैं|

डॉ. हर्लीन ने जानकारी दी कि "स्ट्रोक के कुछ प्रधान लक्षण हैं चेहरा गिरना, असंगत और धुंदली हुई वाणी, शरीर की एक बाजू को लकवा मार जाना, 'असहनीय' सिरदर्द और उलटियॉ| कई रूग्णों में ये लक्षण दिखते हैं और फिर कुछ ही मिनटों में कम हो जाते हैं | ये प्राथमिक लक्षण जिन्हें 'ट्रान्झिअंट इस्केमिक आटॅक' कहते हैं, आगे आनेवाले भयानक स्ट्रोक की निशानी होते हैं जो रोकना ही चाहिए|

ज्यादा फास्टफूड का सेवन, थोडा या शून्य व्यायाम, मोटापा, चिंता ये सारे स्ट्रोक के कारण हैं| धूम्रपान एक कारण है और पूर्ण शाकाहारी लोगों में व्हिटॅमिन बी१२ की कमी यह भी एक कारण हो सकता है| उच्च रक्तदाब या मधुमेह भी स्ट्रोक की संभावना बढाते हैं," डॉ. हर्लीन ने आगे कहा|

उमराव रूग्णालय के प्रमुख कार्यकारी अधिकारी डॉ. आशिश बॅनर्जी ने कहा ,"जीवन की शृंखला को बर्करार रखने के लिए हर कडी को समझना जरूरी है और उचित कदम उचित समय पर उठाना बेहद जरूरी है| इसी लिए हमने हमारे स्टाफ तथा लोगों में जागृती पैदा करने के लिए स्ट्रोक सप्ताह का आयोजन किया है| इसी के अंतर्गत ३ नवम्बर को ४ बजे जनजागृती के लिए कार्य□ा का आयोजन किया गया है ताकि स्ट्रोक की अवस्था में लोग योग्य कदम उठा सकें| " डॉ बॅनर्जी ने यह भी कहा कि २९ अक्तूबर से शुरू होनेवाले सप्ताह में लोग न्युरोसर्जन से मुफ्त में चर्चा कर सकते हैं|